प्रोजेक्ट :- हिंदी

([illegible])

Scanned with CamScanner

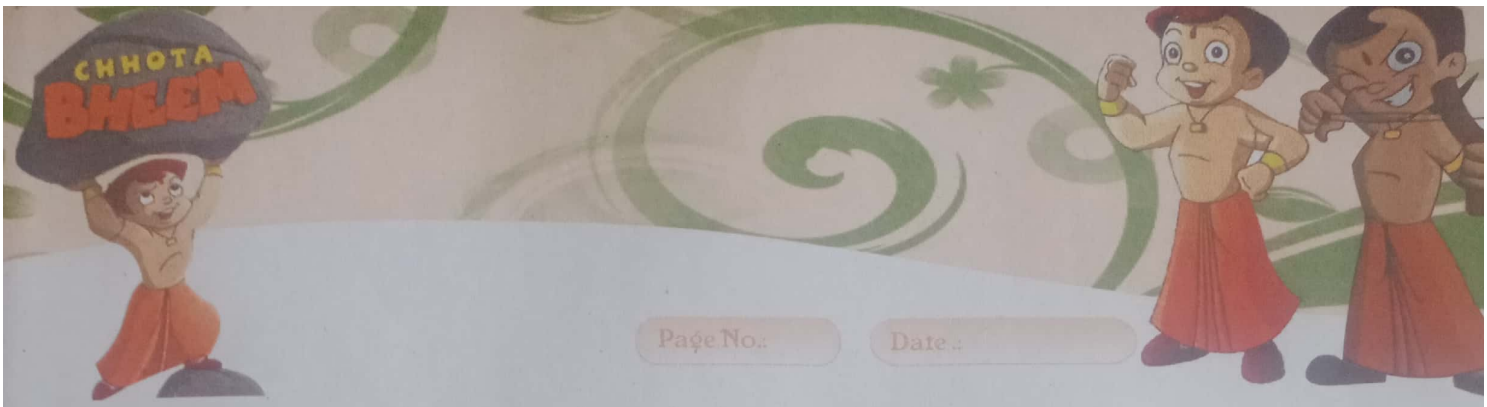

Page No.: Date :

विषय :- हिंदी साहित्य का इतिहास

विद्यार्थी का नाम :- रंगले सोमनाथ शंकर

रोल नंबर :- 538

वर्ग :- बी. ए. भाग तीन

महाविद्यालय का नाम :- कला व वाणिज्य महाविद्यालय वडूज.

08/10

Page No.: Date:

प्र.1 निम्नलिखित प्रतिनिधी कवियों का सामान्य परिचय लिखिए।

i] **केशवदास :-**

जीवनवृत्त :-

रीतिकाल के प्रमुख प्रवर्तक आचार्य केशवदास जी का जन्म धनाढ्य ब्राह्मण कुल में लगभग सं. 1612 में और मृत्यु सं. 1674 में मानी जाती है। इनके पिता काशीनाथपंत संस्कृत के धुरंधर विद्वान थे। 'शीघ्रबोध' नामक ज्योतिष्य ग्रंथ के वे निर्माता थे। इनका परिवार पंडितों का था। इनके सेवक भी संस्कृत बोलते थे। शायद इसी कारण उन्हें भाषा में कविता करते समय ग्लानि का अनुभव हुआ था जिसकी क्षतिपूर्ति मंत्र-तंत्र पांडित्य प्रदर्शन में उन्होंने की है। केशवदास ओरछा नरेश महाराजा इंद्रजीतसिंह की राजसभा में सम्मानित थे। राजा इन्हें अपना गुरु मानते थे। इन्हें इक्कीस गाँव दान में दिए थे। हिंदी के प्रसिद्ध कवि बिहारी इनके पुत्र माने जाते हैं।

रचनाएँ :

① रसिकप्रिया ② नख - शिख ③ कवि - प्रिया ④ छंदमाला
⑤ रामचंद्रिका ⑥ विज्ञानगीता ⑦ वीरसिंहदेव
⑧ रतन लावनी और ⑨ जहाँगीर जस - चंद्रिका.

इनमें से प्रथम चार ग्रंथ रीतिनिरूपण की नूतन पद्धति से युक्त काव्यशास्त्रीय ग्रंथ हैं। 'रामचंद्रिका' प्रबन्धकाव्य वाल्मीकि रामायण और हनुमन्नाटक के आधार पर लिखा हुआ रामचरित का ग्रंथ है। 'विज्ञानगीता' प्रबोधचंद्रोदय के आधार पर लिखा हुआ आध्यात्मिक ग्रंथ है और अंतिम तीन संबंधित आश्रयदाताओं पर लिखे हुए चरित ग्रंथ हैं जिनमें आश्रयदाताओं की वीरगाथाएँ एवं यशोगान है। इस प्रकार केशवदास में काव्य निर्माण की विविध शैलियों की क्षमता दृष्टिगोचर होती है।

आचार्यत्व :-

केशवदास को रीतिकाल के प्रमुख प्रवर्तक आचार्य माना जाता है। उनकी निम्न वृत्तियाँ काव्यशास्त्रीय निरूपण में अधिक रममाण हुई हैं, आचार्यत्व की दृष्टि से उनका महत्व अधिक है। 'रसिकप्रिया' रस-विवेचन से संबंधित ग्रंथ है। शृंगार को रसराज कहा है। रस दोषों का वर्णन भी किया है। कवि-प्रिया में कवि शिक्षा, अलंकार निरूपण और दोषों का भी विवेचन मिलता है। नख-शिख और छंदमाला में शीर्षक

Scanned with CamScanner

के अनुसार विवेचन किया गया है। डॉ. भगीरथ मिश्र जी केशवदास जी के महत्व को प्रकट करते हुए लिखते है 'केशवदास का महत्व सचमुच इस बात में है कि उन्होंने सबसे पहले काव्यशास्त्र को लगभग सभी अंगो पर प्रकाश डाला है।' केशवदास की मौलिकता अधिकांश उदाहरणों में और कहीं-कहीं वर्गीकरण में देखी जा सकती है।

कवित्व :-

केशवदास ने प्रबंध और मुक्तक दोनों प्रकार के काव्यों का प्रणयन किया है। विज्ञानगीता, वीरसिंहदेव चरित, रतन बावनी, जहाँगीर-जस-चंद्रिका इनके प्रबंध काव्य है। विज्ञानगीता में आध्यात्मिक विषयों का विवेचन है और अन्य तीन काव्यों में प्रकृतजन गुणगान है। रामचंद्रिका ग्रंथ राम के पावन चरित्र लिखा है किन्तु इसमें पांडित्य प्रदर्शन, वाग्जाल, अलंकार और छंद भर दिए है। इसका कथानक अनेक स्थलों पर उखड़ गया है। इसमें महाकाव्य की उदात्त शैली भी नहीं मिलती। अलंकार छंदो के मोह में अनेक स्थानों पर हाशिया उपमान दिए है। केशवदास उक्ति-वैचित्र्य और शब्दक्रीडा के प्रेमी थे। जीवन के गंभीर और मार्मिक पक्ष और उनकी दृष्टि नही थी। इन्हें हृदयहीन कवि एवं कठिन काव्य के प्रेत भी कहा जाता है। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी जी का कहना है कि 'कवि को जिस प्रकार संवेदनशील और प्रेषण धर्मवाला हृदय मिलना चाहिए वैसा केशवदास को नहीं मिला था। फिर भी युद्धवर्णन, उपवन, सेना की तैयारी,

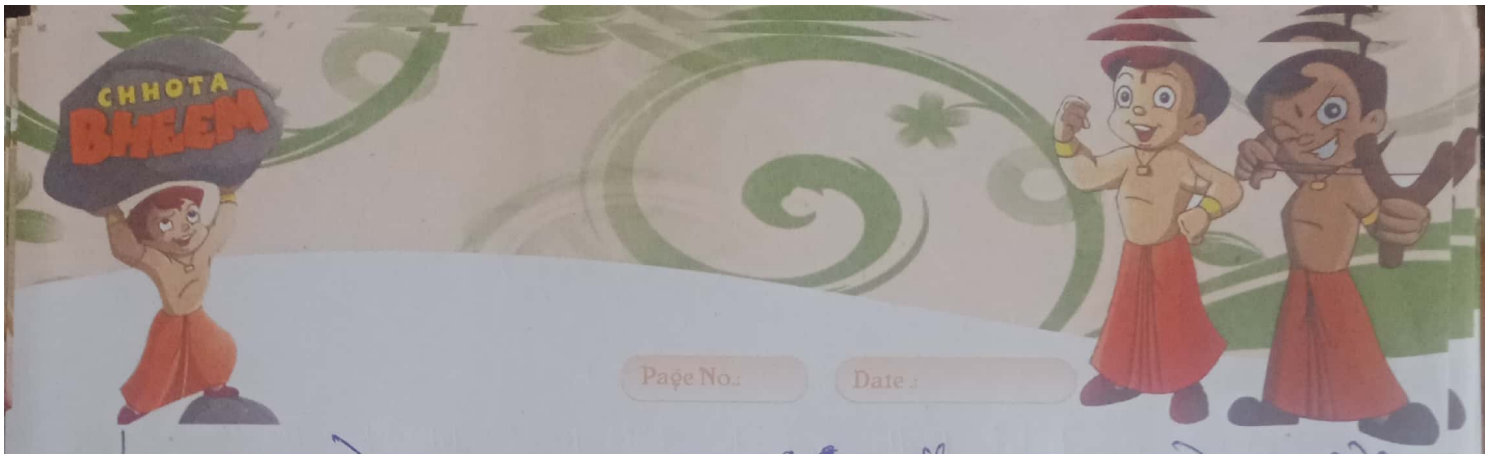

राजदरबार के ठाठ-बाट तथा श्रृंगार और वीर रस के प्रसंगों में उन्हें काफी सफलता मिली है। संवाद-नियोजन की कला में वे निपुण हैं। काव्य की अपेक्षा शायद नाटक की रचना में उन्हें काफी सफलता मिल सकती थी। उनकी अभिव्यंजना शैली और भाषा में अनेक दोष हैं।

आचार्य केशवदास हिंदी रीति परम्परा के प्रथम पथप्रदर्शक होने के कारण उनका महत्त्वपूर्ण स्थान है। भले इस नए रास्ते पर उन्हें सफलता न मिली हो किंतु परवर्ती कवियों के लिए मार्ग प्रशस्त करने का श्रेय उन्हें देना ही पड़ेगा। इस दृष्टि से हिंदी रीति साहित्य में उनका आचार्य कवि के रूप में महत्त्वपूर्ण स्थान है।

ii] बिहारी :-

जीवनवृत्त :-

बिहारी हिंदी साहित्य के लोकप्रिय कवि हैं। इनका जन्म लगभग सं. 1652 तथा मृत्यु सं. 1750 ई. में हुई थी। वे माथुर चौबे थे। उनके पिता का नाम केसोराय या केशवराय था। कुछ विद्वान रीतिकाल के आचार्य केशवदास को इनके पिता मानते हैं। इनके बाद और बहन होने के कारण का उल्लेख मिलता है। ग्वालियर, मथुरा और वसुआगोविंदपुर में से इनका जन्मस्थान ग्वालियर ही अधिक उचित लगता है।

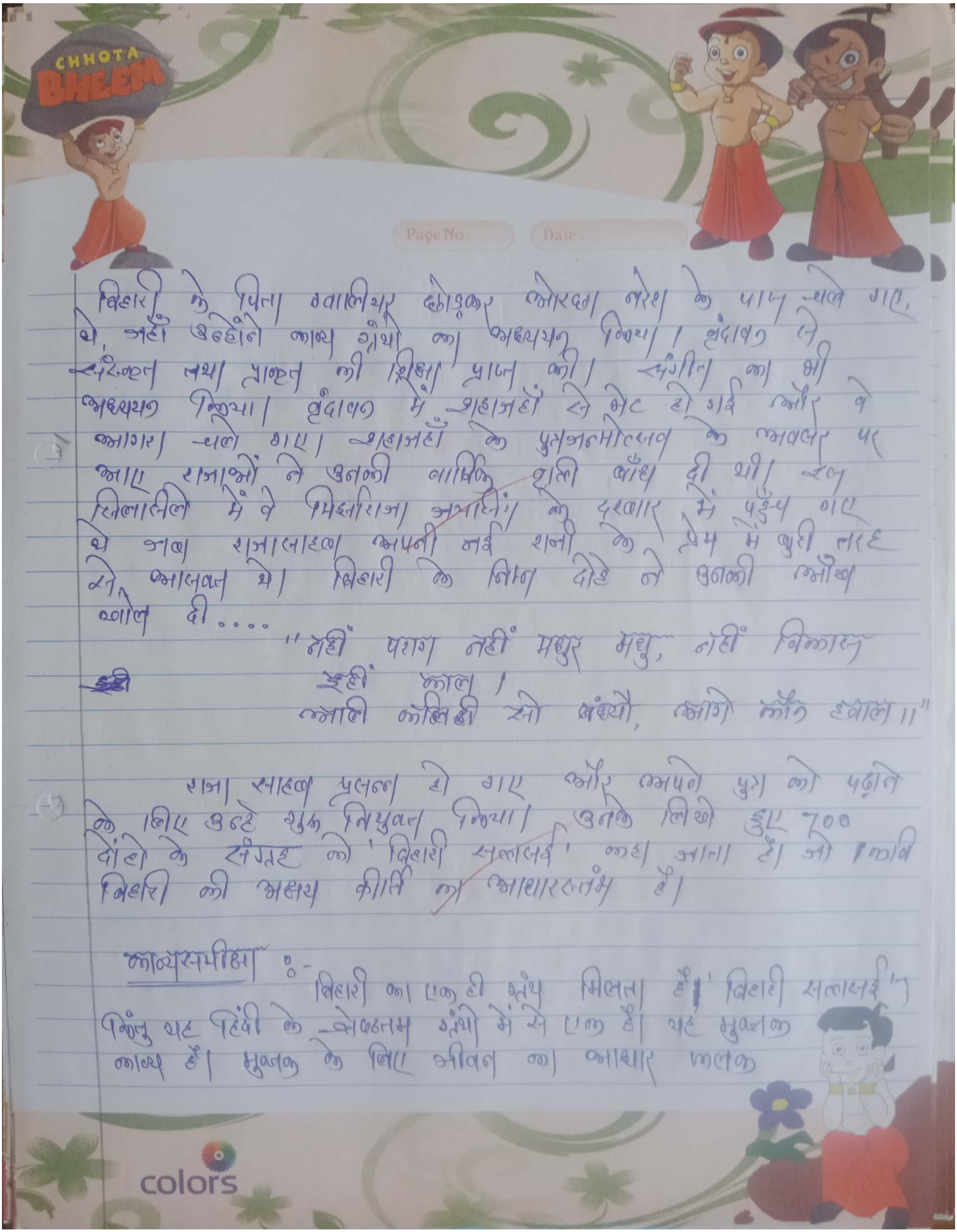

बिहारी के पिता ग्वालियर छोड़कर ओरछा नरेश के पास चले गए, वे, वहीं उन्होंने काव्य ग्रंथों का अध्ययन किया। वृंदावन मे संस्कृत तथा प्राकृत की शिक्षा प्राप्त की। संगीत का भी अध्ययन किया। वृंदावन मे शाहजहाँ से भेट हो गई और वे आगरा चले गए। शाहजहाँ के पुत्रजन्मोत्सव के अवसर पर आए राजाओं ने उनकी वार्षिक वृत्ति बाँध दी थी। इस सिलसिले में वे मिर्जाराजा जयसिंह के दरबार में पहुँच गए वे जब राजासाहब अपनी नई रानी के प्रेम में बुरी तरह से आसक्त थे। बिहारी के निम्न दोहे ने उनकी आँख खोल दी....

"नहीं पराग नहीं मधुर मधु, नहीं विकास इहीं काल।
अली कली ही सो बंध्यो, आगे कौन हवाल॥"

राजा साहब प्रसन्न हो गए और अपने पुत्र को पढ़ाने के लिए उन्हे गुरु नियुक्त किया। उनके लिखे हुए 700 दोहों के संग्रह को 'बिहारी सतसई' कहा जाता है जो कवि बिहारी की अक्षय कीर्ति का आधारस्तंभ है।

<u>काव्यसमीक्षा</u> :- बिहारी का एक ही ग्रंथ मिलता है 'बिहारी सतसई', किंतु यह हिंदी के श्रेष्ठतम ग्रंथो में से एक है। यह मुक्तक काव्य है। मुक्तक के लिए जीवन का आधार फलक

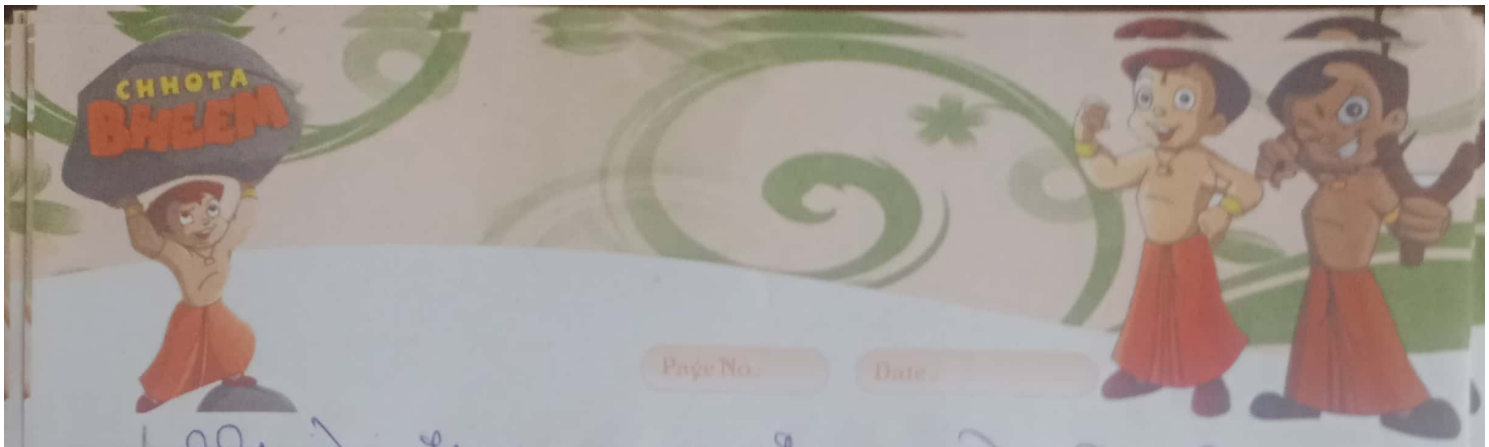

सीमित होता है। मुक्तक काव्य है। मुक्तक के लिए जीवन का आधार फलक सीमित होता है। मुक्तक काव्य कवि के लिए भाषा की समास-शक्ति और कल्पना की समाहार शक्ति का होना अनिवार्य होता है। उसे अपने खंड दृश्यों में रस की अजस्र वेगवती धारा प्रवाहित करनी पड़ती है। जो पाठकों पर स्थायी प्रभाव उत्पन्न कर चमत्कृत कर दे। मुक्तक के सभी गुण बिहारी के में विद्यमान है। सतसई का एक-एक दोहा उज्ज्वल रत्न है। दोहे के सीमित क्षेत्र में उन्होंने 'गागर में सागर' भर दिया है। सतसई के दोहे का महत्व प्रतिपादित करते हुए कहा गया है।

"सतसैय्या के दोहरे ज्यों नावक के तीर।
देखने में छोटे लगें, बेधें सकल शरीर ॥"

भावपक्ष :-

बिहारी श्रृंगारी कवि है। श्रृंगार के दोनों पक्षों - संयोग और वियोग में से संयोग पक्ष में उनकी वृत्तियाँ अधिक रममाण हुई है। वियोग पक्ष के लिए हृदय की सहानुभूति और द्रवणशीलता की आवश्यकता होती है, जो बिहारी के पास नहीं थी। विरह में उन्होंने सारी शक्ति ऊहात्मकता और अतिशयोक्ति में लगा दी है। जिससे विरह वर्णन हास्यास्पद बन पड़ा है। किंतु बिहारी अनुराग के कवि होने के कारण उनका मन मिलन पक्ष में खूब

रमा है। रूपदर्शन में नायिका के रूप का वर्णन बिहारी का दृष्टि लिंद है। उनकी नायिका प्रेम हो जाने पर गुरुजन और परिजनों की आँखों से बचकर भरे बाजार में आँखों से बातें करती है। एकांत में अभिसार के लिए जाती है और झूठ-मूठ की बहाना के बाद रति-सुख में लीन हो जाती है। अनुभावों के विधान में इनकी रस व्यंजना अत्यंत भव्य बन पड़ी है।

"बतरस लालच लाल की मुरली धरी लुकाई।
सौंह करै भौंहनि हँसै दैन कहै नटि जाई॥"

हावों और भावों की ऐसी सुंदर योजना कोई भी समकालीन हिंदी कवि नहीं कर सका है। बिहारी के काव्य में भक्ति के दोहे है किंतु वे भक्त नहीं है, वे तो घोर शृंगारी कवि हैं। बिहारी तत्कालीन अलंकार चमत्कार के मोह में नहीं फँसे है।

<u>कलापक्ष</u> :- बिहारी ने अलंकारवादी न होकर भी अलंकारों का स्वच्छंद रूप से प्रयोग किया है। उनके दोहों में उक्ति-वैचित्र्य के साथ-साथ अलंकारों की सुंदर योजना हुई है। उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक, यमक, असंगति, विरोधाभास, समासोक्ति आदि अलंकारों का सुंदर प्रयोग हुआ है। विरोधाभास तथा असंगति का सुंदर उदाहरण देखिए -

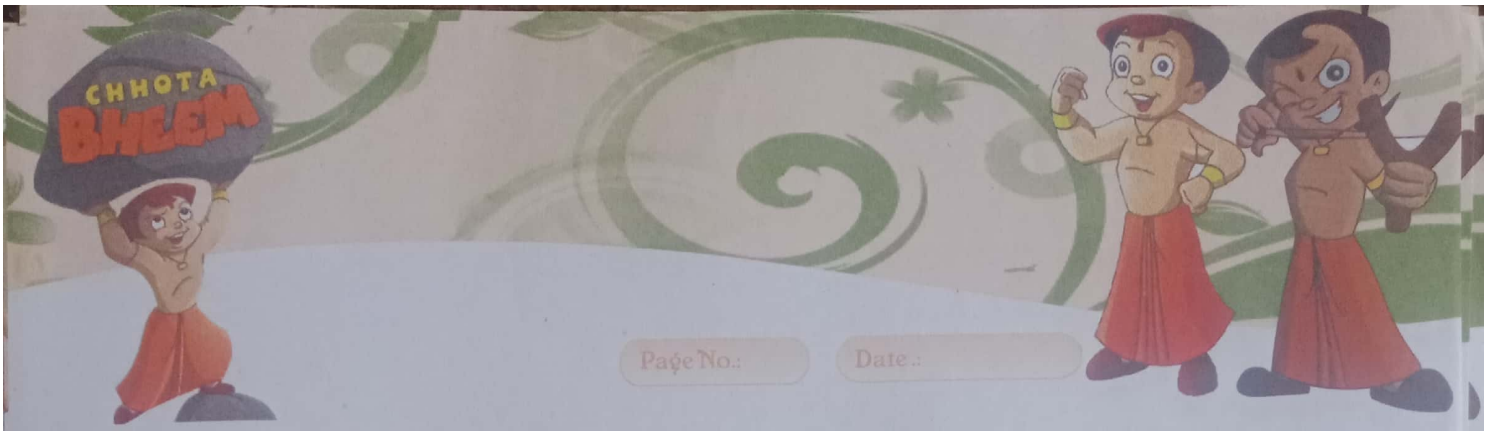

"दृग उरझत टूटत कुटुम जुरत चतुर चित प्रीति।
परति गाँठ दुरजन हिये दई नई यह रीति॥"

बिहारी ने दोहा और सोरठा इन मात्रिक छंदो का प्रयोग किया है। बिहारी की भाषा अपेक्षाकृत अधिक सुव्यवस्थित और शुद्ध ब्रजभाषा है। उनकी भाषा की सरलता, प्रांजलता और एकरूपता के कारण ब्रजभाषा के परिष्कार का मार्ग प्रशस्त हुआ है। उनकी भाषा में बुंदेलखंडी और पूर्वी हिंदी का प्रभाव मिलता है। भाषा की समासशक्ति, विचारों की समाहार शक्ति, भावनिवैचित्र्य, व्यंजना, अलंकरण, माधुर्य, अनुकूल शब्दचयन आदि विशेषताएँ मिलती हैं। ऐसी वाग्विदग्धता और भाषा पर अधिकार रखने वाला मुक्तककार अन्यत्र नहीं मिलता। उनकी सतसई की परम्परा पर सतसईयाँ लिखी जा रही है। इसीमें बिहारी का योगदान और महत्व स्पष्ट होता है।

4

प्र. 2] आधुनिक कालीन सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियाँ लिखिए।

i] आधुनिककालीन सामाजिक परिस्थितियाँ :-

प्रस्तावना :-

हिंदी साहित्य के आधुनिक काल का प्रारंभ सं. 1900 से माना जाता है, किंतु इस युग के साहित्य का बीजवपन उससे भी पहले 40-45 वर्ष पूर्व हो चुका था, जिसका पल्लवन लगभग सं. 1925, भारतेंदु के समय से हुआ। सं. 1850 से सं. 1925 तक हिंदी साहित्य का संक्रांतिकाल या संधिकाल था। इस युग में विविध चित्रण का विषय बना। साहित्य को इस प्रकार हमारे निकट लाने का श्रेय तत्कालीन परिस्थितियों को है। अतः उन परिस्थितियों का परिचय देखना अनिवार्य होता है।

इस युग के आंदोलनों को धार्मिक दृढ़ता, अगाध विश्वास की भावना, धार्मिक आंदोलनों और सामाजिक क्रांति द्वारा प्राप्त हुई। सभी आंदोलनों का उद्देश्य समाजसुधार तथा भारतीय स्वाधीनता था। इन आंदोलनों में - राजाराम मोहनराय का ब्राह्म समाज स्वामी दयानंद सरस्वती का आर्यसमाज, म.गो. रानडे जी का महाराष्ट्र समाज, श्रीमती अनी बेसेंट की थियोसोफिकल सोसायटी, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, महात्मा गांधी का मानवतावाद आदि ने सक्रिय भाग लिया।

Scanned with CamScanner

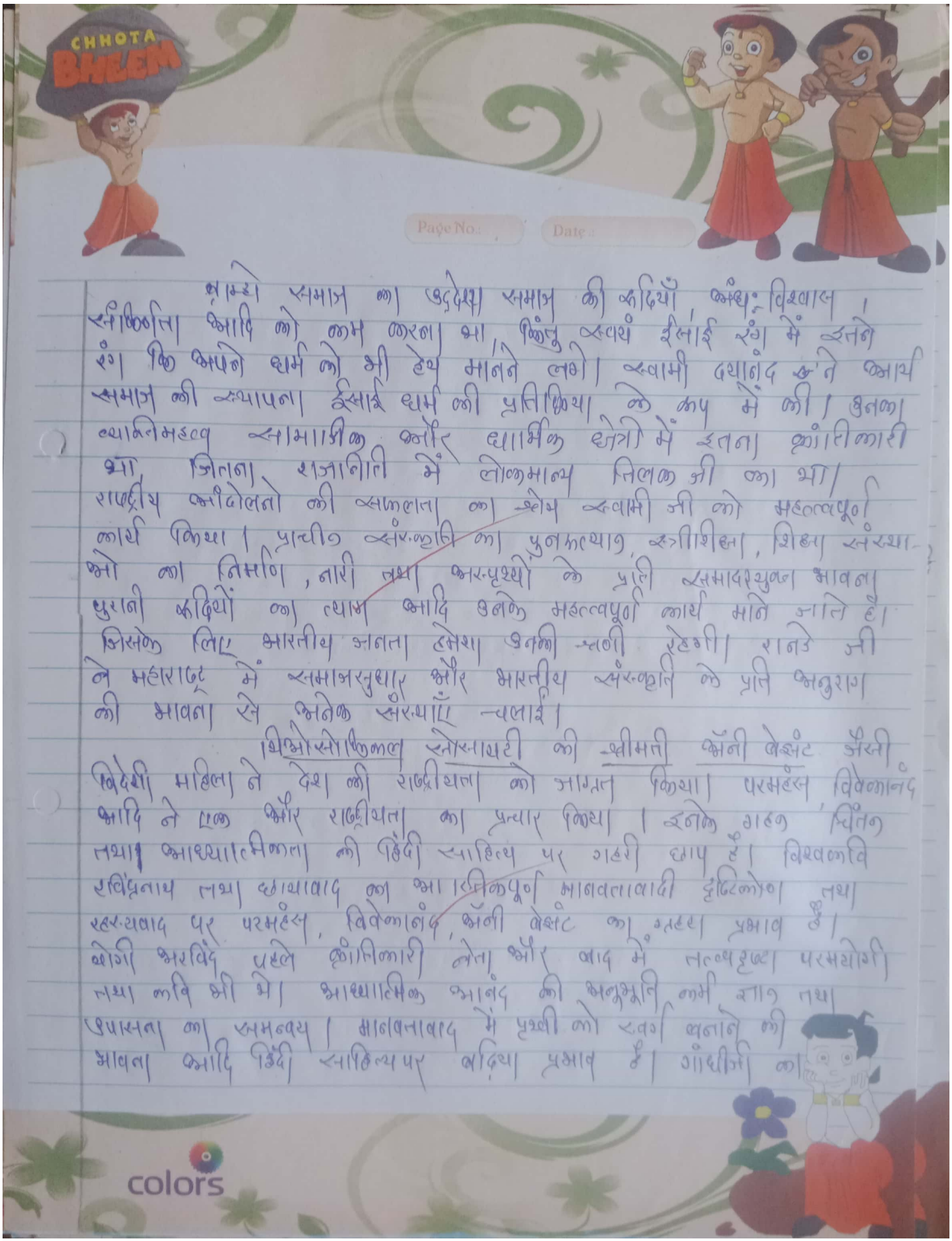

ब्रह्मो समाज का उद्देश्य समाज की रूढ़ियाँ, अंधविश्वास, संकीर्णता आदि को कम करना था, किंतु स्वयं ईसाई रंग में इतने रंगा कि अपने धर्म को भी हेय मानने लगे। स्वामी दयानंद ने आर्य समाज की स्थापना ईसाई धर्म की प्रतिक्रिया के रूप में की। उनका व्यक्तित्व सामाजिक और धार्मिक क्षेत्रों में इतना क्रांतिकारी था, जितना राजनीति में लोकमान्य तिलक जी का था। राष्ट्रीय आंदोलनों की सफलता का श्रेय स्वामी जी को महत्वपूर्ण कार्य किया। प्राचीन संस्कृति का पुनरुत्थान, स्त्रीशिक्षा, शिक्षा संस्थाओं का निर्माण, नारी तथा अस्पृश्यों के प्रति समादरयुक्त भावना पुरानी रूढ़ियों का त्याग आदि उनके महत्वपूर्ण कार्य माने जाते है। जिसके लिए भारतीय जनता हमेशा उनकी ऋणी रहेगी। रानडे जी ने महाराष्ट्र में समाजसुधार और भारतीय संस्कृति के प्रति अनुराग की भावना से अनेक संस्थाएँ चलाई।

थिओसोफिकल सोसायटी की श्रीमती ऍनी बेसंट जैसी विदेशी महिला ने देश की राष्ट्रीयता को जागृत किया। परमहंस, विवेकानंद आदि ने एक और राष्ट्रीयता का प्रचार किया। इनके गहन चिंतन तथा आध्यात्मिकता की हिंदी साहित्य पर गहरी छाप है। विश्वकवि रविंद्रनाथ तथा छायावाद का आस्तिकपूर्ण मानवतावादी दृष्टिकोण तथा रहस्यवाद पर परमहंस, विवेकानंद, ऍनी बेसंट का गहरा प्रभाव है। योगी अरविंद पहले क्रांतिकारी नेता और बाद में तत्वदृष्टा परमयोगी तथा कवि भी थे। आध्यात्मिक आनंद की अनुभूति कर्म ज्ञान तथा उपासना का समन्वय। मानवतावाद में पृथ्वी को स्वर्ग बनाने की भावना आदि हिंदी साहित्य पर बढ़िया प्रभाव है। गांधीजी का

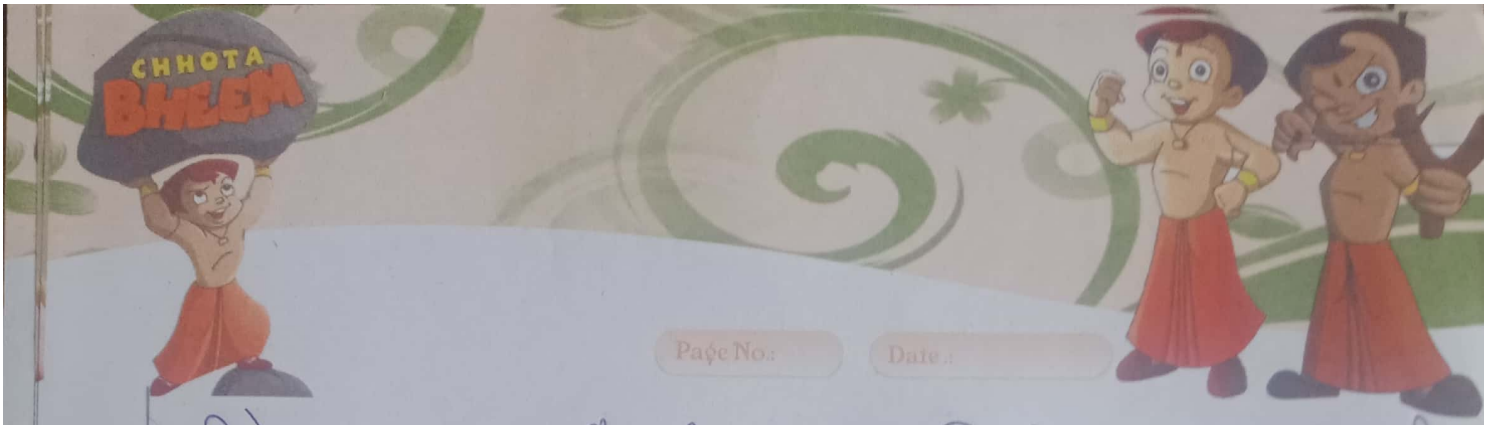

दृष्टिकोण समन्वयात्मक है। गीता का अनासक्ति योग उनका जीवनदर्शन है। सत्य और अहिंसा अनेक अस्त्र उनके अमोघ शस्त्र हैं। गांधीजी ने भारतीय जनता आत्मबल, नैतिकता, दृढ़ता, उदारता और चारित्रिक गुणों का विकास किया। हिंदी साहित्य के आधुनिक काल का द्वितीय चरण गांधीवाद से प्रभावित है।

ईसाई धर्म प्रचार तथा अंग्रेजी साहित्य के परिणाम-स्वरूप भारत में धार्मिक एवं सामाजिक सुधारणा में नवचेतना आ गई। बालविवाह रूढ़ियां, जातिभेद, अंधश्रद्धा, दहेजप्रथा, समुद्रयात्रा, नारी जाति का विरोध किया गया। अस्पृश्यता, छूआछूत आदि की ओर समादर की भावना, विधवा विवाह का समर्थन आदि के साथ ही मानवतावाद तथा आध्यात्मिकता का प्रचार हुआ।

ii] राजनीतिक परिस्थितियाँ :-

हिंदी के आधुनिक साहित्य का मूल्यांकन करने के लिए तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों को देखना अत्यंत आवश्यक है। 17 वीं शती से प्रारम्भ 'ईस्ट इंडिया कंपनी' का शासन, रानी विक्टोरिया का शासन और उनका हिंदुस्तान पर पूरा अधिकार, देशी रियासतों को अंग्रेजी शासन में मिलाना, अनेक कमिशनों, पैक्टो द्वारा की गई संधियाँ तथा राज्य चलाने के निमित्त क्लार्क लोगों का कारखाना, उनके लिए खोले गए स्कूल आदि। साथ ही रेल, तार डाकखानों आदि की सुविधाएँ और इन्हीं से प्रेरित अनेक आंदोलन आदि महत्वपूर्ण घटनाएँ हैं कि जिनका परिणाम तत्कालीन

साहित्य पर पड़ा है।

सन 1857 का स्वातंत्र्य संग्राम इस काल की सबसे प्रमुख घटना है। यह स्वतंत्रता संग्राम भारतीय राजा-महाराजाओं के विश्वासघात से असफल हुआ। किंतु लोगों में अंग्रेजो के खिलाफ राष्ट्रीय जागरण की विद्रोह की आग भड़क उठी।

परिणामस्वरूप भारत में विक्टोरिया शासन आ गया। अंग्रेजी शासन दृढ़ बनता गया। लॉर्ड मैकाले ने अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली का प्रचलन किया, जिसमें भारतीय शिक्षित समाज अंग्रेजी सभ्यता में बुरी तरह रंगा जाने लगा। सन 1885 में राष्ट्रीय कॉंग्रेस की स्थापना हुई। सन 1905 में बंग-भंग के कानून से स्वाधीनता की भावना अधिक तीव्रता तीव्र बन गई। अनेक क्रांतिकारी संस्थाओं का निर्माण हुआ। लोकमान्य तिलक, अरविंद घोष, भगतसिंह, चंद्रशेखर आझाद, सुखदेव, राजगुरु, रासबिहारी बोस आदि ने सक्रिय भाग लिया। सन 1919 में "रौलट ॲक्ट" द्वारा भारतीयों की सभी आशाओं पर पानी फेर दिया, जिसके परिणामस्वरूप 'जालियनवाला बाग' हत्याकांड हुआ। लो. तिलक जी ने 'स्वराज्य यह मेरा जन्मसिद्ध अधिकार' है की घोषणा की। सन 1920 में कॉंग्रेस की बागडोर गांधीजी ने सँभाली। हिंदू मुस्लिमों का असहयोग आंदोलन चलाया। विदेशी वस्त्र, सरकारी नौकरी, स्कूल कॉलेज आदी का बहिष्कार किया।

सन 1920 से 30 तक अंग्रेजी शासन का दमनचक्र खूब रहा। अनेक नेता गिरफ्तार किए गए। स्वराज्य पार्टी की स्थापना हुई। डॉ. जीना मुस्लिम लीग में सम्मिलित

हो गए। 1931 से 35 तक अनेक कमीशन और पैक्ट हुए। सन् 1937 में निर्वाचन हुए, जिसमें अधिकतर प्रांतों में कांग्रेस के मंत्रीमंडल मंत्रिमंडल बने। द्वितीय विश्वयुद्ध का प्रारंभ हुआ। सन 1939 में मंत्रिमंडल ने त्यागपत्र दिया। 1940 में पाक की मांग की गई। 1942 में क्रीप्स कमीशन आ गया। क्रिप्स के प्रति लोग के अपेक्षा रोष अधिक हुआ। कांग्रेस ने 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव पेश किया, अनेक गिरफ्तारियाँ हुई। 1945 में इंग्लैंड में उदार दल की सरकार बनी। 1946 में स्वतंत्रता का स्वर्ण-विहान आया। स्वतंत्र भारतीय राजनीतिक चेतना, राष्ट्रीयता, अंतरराष्ट्रीयता और पंचशील से प्रेरित मानव जाति को अमर देन बन गई। हिंदी साहित्य ने इस नवजागरण और नवराष्ट्रीय चेतना का अनुकरण किया और उसे प्रेरित भी किया।

4

8